''ज़्या यीशु मनुष्य के लिए नया ढंग या मार्ग है?''

I. ज़्या पुराना और नया मार्ग एक जैसे ही हैं ?

1. पुराने ढंग में याजक एक पशु का _____ लेकर प्रायश्चित करता था। लैव्य. 4:30, 31
2. यह केवल एक _____ था (इब्रा. 10:1) जिससे _____ दूर नहीं हो सकते थे। इब्रा. 10:4
3. प्रायश्चित का नया ढंग यीशु का _____ है। इब्रा. 10:19, 20
4. यीशु की _____ से नई व्यवस्था लागू हुई (इब्रा. 9:16, 17) और इसी कारण _____ से इसका प्रचार आरज़्भ हुआ। लूका 24:46, 47

II. नए ढंग को सिखाने के लिए ज़्या तैयारी की गई थी ?

1. परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी कि वचन _____ से निकलेगा। यशा. 2:3
2. आत्मा ने प्रेरितों को _____ से लेकर यहूदिया, सामरिया और पृथ्वी के कोने-कोने तक गवाही देने के योग्य बनाने के लिए _____ के साथ आना था। प्रेरितों 1:8
3. आत्मा ने आकर, उन्हें _____ बातें सिखानी थीं, जो यीशु ने उनसे कहा था वह _____ दिलाना था (यूहन्ना 14:26) और उन्हें _____ सत्य का मार्ग बताना था। यूहन्ना 16:13
4. यरूशलेम में (प्रेरितों 2:5) पिन्तेकुस्त के दिन वे _____ _____ से परिपूर्ण हो गए (प्रेरितों 2:4) और यीशु की गवाही देने लगे। प्रेरितों 2:22

III. यरूशलेम में ज़्या सिखाया जाने लगा कि पापों की क्षमा के लिए ज़्या करना आवश्यक है ?

1. विश्वास करने वालों से पतरस ने कहा कि _____ और पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से _____ लें। प्रेरितों 2:36-38
2. यरूशलेम में सुनाया जाने वाला यह संदेश आज _____ जातियों के लिए है। लूका 24:47

IV. इस शिक्षा को सुनकर, लोगों की प्रतिक्रिया ज़्या थी ? (नीचे दिए गए हवाले प्रेरितों के काम पुस्तक से हैं)

1. 2:41--यरूशलेम _____
2. 8:12--सामरिया _____
3. 8:36-39--कूश देश का मन्त्री _____
4. 9:18--पौलुस _____
5. 10:48--कुरनेलियुस _____

6. 16:33--दारोगा _____
7. 18:8--कुरिन्थुस _____
8. 19:5--इफिसुस _____

V. बपतिस्मे के बाद ज़्या हुआ?

1. उन्हें _____ जीवन की चाल चलना था। रोमियों 6:4
2. उनके पाप _____ हो गए (प्रेरितों 2:38) और _____ गए थे। प्रेरितों 22:16
3. उन्हें _____ मिल गया था। मरकुस 16:15,16

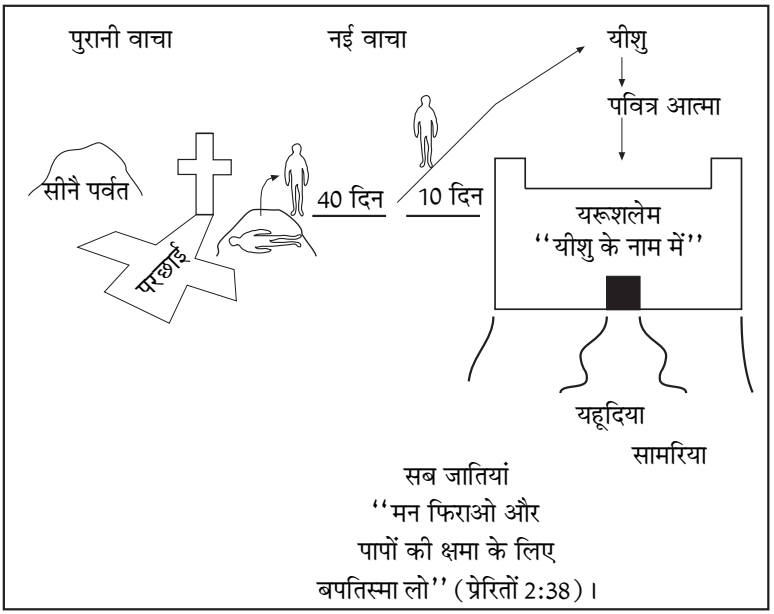

अध्ययन शीट प्रस्तुत करना:

''ज़्या यीशु मनुष्य के लिए नया ढंग या मार्ग है?''

यह अध्ययन शीट ''ज़्या यीशु मनुष्य के लिए नया मार्ग है?'' प्रथम अध्ययन या अध्ययन शीट ''पाप एवं मृत्यु कहां से आए?'' (पाठ 1) या अध्ययन शीट ''परमेश्वर की योजना ज़्या है?'' (पाठ 2) के बाद भी इस्तेमाल की जा सकती है। इस अध्ययन शीट का सबसे तर्कसंगत इस्तेमाल इसे ''परमेश्वर की योजना ज़्या है?'' के अध्ययन के बाद प्रस्तुत करना है।

उद्देश्य

''यीशु मार्ग'' शीट का उद्देश्य यह दिखाना है कि मनुष्य की क्षमा के आधार के रूप में, यीशु के लहू का प्रचार यरूशलेम से आरज़्भ हुआ था। यरूशलेम में बताई गई क्षमा की शर्तें सब जातियों के लिए एक ही हैं।

पाठ का संक्षेप

यह अध्ययन शीट दिखाती है कि पशुओं के बलिदान से, जो वास्तविक बलिदान की परछाई ही थे, पाप क्षमा नहीं हो सकते थे, और अब यीशु का लहू क्षमा का एक नया और प्रभावी ढंग उपलज़्ध कराता है। पर्याप्त तैयारी के बाद, इस *नये ढंग* का प्रचार यरूशलेम से आरज़्भ होकर संसार के दूसरे भागों में पहुंचा। पहली सदी के लोगों को दी गई क्षमा पाने की शर्तें जिनका प्रचार यरूशलेम में किया गया था, जो प्रेरितों के काम पुस्तक में लिखी गई हैं, सारे संसार के लिए हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक में जहां भी लोगों ने वचन को ग्रहण किया, वहां उनका एक ही ढंग था, सो सब में क्षमा की एक जैसी शर्तें बताई गई होंगी।

परिचय

पिछले पाठ में हमने सीखा था कि व्यवस्था से अनुग्रह नहीं आया था। यदि व्यवस्था से

अनुग्रह, दया और धार्मिकता मिल सकती, तो यीशु को मरने की आवश्यकता नहीं थी और उसकी मृत्यु व्यर्थ ही होनी थी। इस पाठ में हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि *पुरानी* वाचा के अधीन जब किसी से अनजाने में पाप हो जाता था तो वे ज़्या करते थे, और यह भी अध्ययन करेंगे कि *नये* ढंग अर्थात नई वाचा में क्षमा पाने के लिए हमें ज़्या करना चाहिए।

I. पुराना और नया ढंग

अध्ययन के इस भाग में हम इस बात पर विचार करेंगे कि *पुरानी* वाचा और *नई* वाचा के अधीन क्षमा के ढंग एक जैसे ही हैं या नहीं। [*शीट की पिछली* ओर सीनै पर्वत बनाएं और इसके ऊपर ''पुरानी वाचा'' लिख दें।]

1. साधारण लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिए याजक किस वस्तु का इस्तेमाल करते थे? [लैव्य. 4:30, 31 पढ़ें।] याजक क्षमा के लिए पशु का *ज़्या* इस्तेमाल करते थे? [रिज़्त स्थान में ''लहू'' भर लें।]

2. ज़्या पशु के लहू से क्षमा हो जाती थी? [इब्रा 10:1 पढ़ें।] पशु का लहू केवल *ज़्या* था? [रिज़्त स्थान में ''प्रतिबिज़्ब'' भरें।] ज़्या प्रतिबिज़्ब का वास्तविक स्वरूप होता है? आप गहरी खाई को पार करने के लिए पुल को पार करेंगे या उसके प्रतिबिज़्ब को? प्रतिबिज़्ब ज़्या कर सकता है? ज़्या प्रतिबिज़्ब वास्तविक स्वरूप का संकेत देता है?

[इब्रा. 10:4 पढ़ें।] पशुओं का लहू *ज़्या* दूर नहीं कर सकता था? [रिज़्त स्थान में ''पाप'' भर लें।] पशुओं का लहू केवल वास्तविक स्वरूप अर्थात क्रूस पर यीशु के बहे लहू का प्रतिबिज़्ब या परछाई ही था। [अध्ययन शीट के *पीछे* एक क्रूस बनाकर क्रूस की परछाई बनाएं। देखें पृष्ठ 128।]

3. क्षमा का नया ढंग ज़्या है? [पढ़ें इब्रा. 10:19, 20] क्षमा का नया ढंग *ज़्या* है? [रिज़्त स्थान में ''लहू'' भर लें।]

4. यह नया ढंग कब लागू हुआ? [इब्रा. 9:16, 17 पढ़ें।] नया ढंग यीशु की *किस* पर लागू हुआ? [रिज़्त स्थान में ''मृत्यु'' भर लें।] यीशु के नाम में पापों की क्षमा का प्रचार *कहां* से आरज़्भ होना था? [लूका 24:46, 47 पढ़ें। रिज़्त स्थान में ''यरूशलेम'' भर लें।]

इस भाग में हमने ज़्या सीखा है? हमने सीखा है कि क्षमा का पुराना ढंग क्षमा का ही प्रतिबिज़्ब था, यीशु का लहू *दूसरे* अर्थात नये ढंग के साथ-साथ *पहले* के अधीन रहने वाले लोगों की क्षमा का भी आधार है (इब्रा 9:15)। पशुओं का लहू केवल एक प्रतीक ही था, परन्तु उस प्रतीक को यीशु के लहू का समर्थन प्राप्त था। यह जानने के लिए कि यीशु क्रूस पर मरेगा, परमेश्वर ने यीशु के मरने की प्रतीक्षा नहीं करनी थी। परमेश्वर ने सृष्टि की रचना से पहले ही यीशु की मृत्यु की योजना बनाई थी, उसे पहले से देखा और जाना था (1 पतरस 1:18-20)।

II. नये ढंग (मार्ग) के लिए तैयारी

पुराना नियम पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया था (2 पत. 1:19, 20) और पृथ्वी पर यीशु

के आने से पहले लिखा गया था, परन्तु यीशु के क्रूस पर मरने के बाद भी, उसकी कोई शिक्षा लिखी नहीं गई थी। यीशु की शिक्षा को *स्मरण रखने* के कुछ साधन और नये ढंग का प्रचार करने के लिए *आरज़्भ का स्थान* दिए जाने थे।

1. परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि अन्त के दिनों में प्रभु का वचन एक निश्चित नगर से निकलेगा। [पढ़ें यशा. 2:3] प्रभु का वचन *किस* नगर से निकलना था? [रिज़्त स्थान में ''यरूशलेम'' भर लें।] यह ''अन्त के दिनों'' में होना था। (यशा. 2:2)। नये नियम के अनुसार अब हम अन्त के दिनों में रह रहे हैं (इब्रा. 1:1, 2), जिसका यीशु के पुनरुत्थान के बाद प्रथम पिन्तेकुस्त के पर्व पर पतरस ने भी संकेत दिया (प्रेरितों 2:1, 14)।

2. यीशु ने प्रतिज्ञा की थी कि प्रेरितों को उनकी सेवकाई के लिए तैयार करने के लिए पवित्र आत्मा भेजा जाएगा। [प्रेरितों 1:8 पढ़ें] प्रेरित *कहां* से लेकर गवाह बन पाए और आत्मा *किस* के साथ आया? [रिज़्त स्थानों में ''यरूशलेम'' और ''सामर्थ'' भर लें। *पिछली ओर* यह संकेत देते हुए कि वचन ने यरूशलेम से यहूदिया, सामरिया और फिर पृथ्वी के कोने-कोने तक जाना था यरूशलेम का रेखाचित्र बनाएं। इसके ऊपर ''यीशु'' और फिर ''पवित्र आत्मा'' लिख लें। देखें पृष्ठ 128।]

3. पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को कैसे तैयार करना था? [यूहन्ना 14:26 पढ़ें।] उसने प्रेरितों को *कितना* सिखाना था और उन्हें यीशु की *कितनी* बातें स्मरण करने में सहायता करनी थी? [रिज़्त स्थानों में ''सब'' भर लें।] उसने प्रेरितों को कितना सत्य बताना था? [पढ़ें यूहन्ना 16:13] उसने उन्हें *कितना* सत्य बताना था? [रिज़्त स्थान में ''सब'' भर लें।]

[यदि सीखने वाला आत्मा द्वारा *केवल* प्रेरितों को ही सब सत्य बताने पर कोई प्रश्न पूछता है, तो उसे समझाएं कि यह प्रतिज्ञा दिए जाने के समय केवल प्रेरित ही वहां उपस्थित थे (यूहन्ना 13:1-4; मज़ी 26:20; लूका 22:13, 14)।]

4. प्रेरितों पर पवित्र आत्मा कब और कहां आया? [प्रेरितों 2:4 पढ़ें।] यरूशलेम में (प्रेरितों 2:5), जहां यीशु ने उन्हें आत्मा पाने के लिए प्रतीक्षा करने को कहा था (लूका 24:49; प्रेरितों 1:4), प्रतीक्षा करते समय वे *किस से* भर गए थे? [रिज़्त स्थान में ''पवित्र आत्मा'' भर लें।] फिर वे यीशु की गवाही देने लगे थे (प्रेरितों 2:22)।

[*पिछली ओर* यीशु के गाड़े जाने, जी उठने और स्वर्ग पर उठाए जाने का चित्र बनाएं। इसके ऊपर लिखें ''नई वाचा।'' देखें पृष्ठ 128।] पिन्तेकुस्त का पर्व फसह के पचास दिन बाद आता था (लैव्य. 23:15) इसलिए, यह यीशु के पुनरुत्थान के पचास दिन बाद की बात है जो फसह के पर्व के बाद जी उठा था। वह स्वर्ग में उठा लिए जाने से पहले चालीस दिन तक पृथ्वी पर रहा (प्रेरितों 1:3) था। पिन्तेकुस्त का पर्व उसके स्वर्ग में लौटने के केवल दस दिन बाद ही था। इसका अर्थ है कि प्रेरितों पर आत्मा यीशु के स्वर्ग में लौटने के दस दिन बाद ही आ गया था। [यह दिखाने के लिए *पिछली ओर* ''40 दिन'' और ''10 दिन'' लिखें। देखें पृष्ठ 128।]

हमने इस भाग में ज़्या सीखा है? हमने सीखा कि परमेश्वर ने अन्त के दिनों में प्रभु का वचन यरूशलेम से निकलने की भविष्यवाणी की और उसकी तैयारी की। यीशु ने प्रेरितों पर

पवित्र आत्मा भेजा ताकि वे *यरूशलेम* से आरम्भ करके उसके नाम में उद्धार का प्रचार करने के लिए वैसे ही तैयार हों जैसे परमेश्वर ने पवित्र शास्त्र में प्रतिज्ञा की थी (लूका 24:46, 47)। यीशु के पुनरुत्थान के बाद पहले पिन्तेकुस्त के दिन उन्होंने ऐसा ही किया (प्रेरितों 2:5, 22)।

III. क्षमा पेश की गई

1. यीशु मसीह के नाम में उद्धार का संदेश देने वाला *पहला व्यक्ति* पतरस ही था। यदि पतरस ने उससे पूछने वालों को कि उन्हें सीनै पर्वत पर सिखाई गई बातों को पूरा करने के लिए क्या करना चाहिए, बताना होता तो वह उन्हें क्या करने के लिए कहता? वह तो उन्हें पशुओं के बलिदान भेंट करने के लिए ही कहता। यीशु की मृत्यु का काम पूरा हो जाने से, यीशु के लहू के द्वारा क्षमा का नया ढंग आरम्भ हो गया था। इस नये ढंग में क्षमा की शर्तें क्या हैं? [प्रेरितों 2:38 पढ़ें।] यीशु में विश्वास करने वालों को यीशु मसीह के नाम में *क्या* करने के लिए कहा गया था? [रिक्त स्थानों पर ''मन फिराओ'' और ''बपतिस्मा'' भरें।]

2. पतरस ने उन्हें पशुओं का बलिदान भेंट करने के लिए क्यों *नहीं* कहा? क्योंकि क्रूस पर यीशु की मृत्यु से पुराना ढंग खत्म हो चुका था। यरूशलेम से आरम्भ करके पतरस ने नये ढंग की शर्तों का प्रचार किया [लूका 24:47 पढ़ें।] पतरस द्वारा यरूशलेम में दिया गया यह संदेश *किसके लिए* था? [रिक्त स्थान में ''सब'' भरें। ''सब जातियों'' के नीचे *पिछली ओर* ''मन फिराओ और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लो'' लिखें (प्रेरितों 2:38)।]

इस भाग में हमने क्या सीखा? हमने सीखा है कि नये प्रबन्ध में यीशु पर विश्वास करने वालों को मन फिराकर बपतिस्मा लेना चाहिए जिससे यीशु का लहू उन्हें उनके पापों से शुद्ध करे।

IV. प्रतिक्रियाएं

उस संदेश को जिसका प्रचार यरूशलेम में हुआ था, सुनकर संसार के बाकी लोगों में क्या प्रतिक्रिया थी? क्या उन्होंने उसे एक ही तरह उत्तर दिया? प्रेरितों के काम की पुस्तक यह नहीं कहती कि जहां भी लोगों में पापों की क्षमा की आवश्यकता का प्रचार किया गया, वहां सबने इसे ग्रहण कर लिया, परन्तु यह इतना अवश्य बताती है कि उन्होंने इसे किस प्रकार ग्रहण किया था। हर जगह क्षमा की शर्तें बताना आवश्यक नहीं है क्योंकि यह आश्वासन दिया गया है कि जो प्रचार आरम्भ में यरूशलेम में हुआ वही शेष संसार में भी होगा। संसार के बाकी भागों में हुए प्रचार के विषय में जानने के लिए, हमें इतना ही जानने की आवश्यकता है कि यरूशलेम में क्या प्रचार हुआ था।

इसकी तुलना वेक्यूम कलीनर की एक कंपनी द्वारा एक सेल्स मैनेजर को शिकागो से लेकर अमेरिका के प्रत्येक भाग में अंकित मूल्य के अनुसार एक विशेष वेक्यूम कलीनर का प्रदर्शन करने और उसे बेचने का निर्देश देने से करें। जो कुछ हुआ वह व्यक्ति उसे इस प्रकार बताता है:

वह सेल्समैन शिकागो में गया और वहां जाकर उसने वेज़्यूम कलीनर लोगों को दिखाया। कुछ लोगों को यह अच्छा लगा और वे पूछने लगे, ''एक वेज़्यूम कलीनर कितने में मिलेगा?'' इस पर उस सेल्समैन ने उज़र दिया, ''आपको 300 डॉलर में वेज़्यूम कलीनर मिल सकता है।'' जिन्हें अच्छा लगा उन्होंने इसे खरीद लिया।

फिर उसने सेंट लूईस में जाकर वेज़्यूम कलीनर का प्रदर्शन किया। जितने लोगों को अच्छा लगा उन्होंने इसे खरीद लिया। फिर वह लॉस एंजिल्स चला गया और वहां के लोगों ने भी वेज़्यूम कलीनर खरीद लिए।

ज़्या समझाने वाले को हर बार यह बताने की आवश्यकता है कि जिन्होंने पहले वेज़्यूम कलीनर खरीदे थे उन्हें बताया गया था कि वे इसे 300 डॉलर में खरीद सकते हैं? नि:संदेह नहीं।

इसलिए लूका को भी प्रेरितों के काम की पुस्तक लिखते हुए हर बार यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं थी कि पापों से क्षमा चाहने वालों को बताया गया था कि वे पापों की क्षमा के लिए मन फिराकर बपतिस्मा लें। इतनी तो समझ होनी ही चाहिए थी ज़्योंकि जो प्रचार यरूशलेम में किया गया था वही संसार के शेष भागों में होना था। यह तथ्य कि उन्होंने बपतिस्मा लेकर वचन को ग्रहण किया, संकेत देता है कि उन्हें पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेने का निर्देश दिया गया था।

1-8. लोगों ने वचन *कैसे* ग्रहण किया? [प्रेरितों के काम में 2:41; 8:12; 8:36-39; 9:18; 10:48; 16:33; 19:5 में से हर आयत को पढ़ने के बाद रिज़्त स्थान में ''बपतिस्मा लिया'' भर लें।] इस तथ्य से कि वचन को ग्रहण करने की बातें हमेशा एक दूसरे से मेल खाती थीं, यह संकेत मिलना चाहिए कि संदेश भी मेल खाता होना चाहिए। बेशक उद्धार पाने के लिए उन्हें ज़्या कहा गया था यह प्रकट नहीं किया गया, परन्तु एक ही प्रकार से वचन को ग्रहण करने से संकेत मिलना चाहिए कि जो कुछ यरूशलेम में प्रचार हुआ था उसी वचन का प्रचार संसार के सब लोगों में हर जगह किया गया।

हमने इस भाग से ज़्या सीखा है? हमने सीखा है कि जहां भी वचन का प्रचार हुआ वहां लोगों ने इसे एक ही तरह से ग्रहण किया।

V. बपतिस्मे के बाद

1. किसी के बपतिस्मा ले लेने के बाद उसे ज़्या उज़्मीद होनी थी? बपतिस्मा लेने वाले व्यज़्ति से किस प्रकार के जीवन की अपेक्षा होती थी? [रोमियों 6:4 पढ़ें।] बपतिस्मा लिए हुए व्यज़्ति का जीवन *कैसा* होना चाहिए था? [रिज़्त स्थान में ''नये'' भर लें।]

2.बपतिस्मा ज़्यों लिया जाता है? [प्रेरितों 2:38 पढ़ें।] विश्वास करने वालों को पतरस ने बताया कि वे मन फिराकर *किस लिए* बपतिस्मा लें? [रिज़्त स्थान में ''क्षमा'' भर लें।] तरसुस के शाऊल को (जो बाद में पौलुस प्रेरित के नाम से प्रसिद्ध हुआ) अपने पाप धो डालने के लिए ज़्या करने को कहा गया था? [प्रेरितों 22:16 पढ़ें।] शाऊल को उठकर बपतिस्मा लेने के लिए कहा गया था और उसके पापों का *ज़्या* होना था? [रिज़्त स्थान में ''धोए'' भर लें।]

3. यीशु ने प्रेरितों को सारे संसार में जाकर सुसमाचार का प्रचार करने के लिए कहा था। यीशु ने किसके लिए कहा कि वह सुसमाचार का प्रचार सुनकर उद्धार पाएगा? [मरकुस 16:15, 16 पढ़ें।] यीशु ने कहा कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का *ज़्या* होगा? [रिक्त स्थान में ''उद्धार'' भरें]।

इस भाग से हमने ज़्या सीखा है? हमने सीखा कि यदि कोई व्यक्ति बपतिस्मा लेता है तो उससे नया जीवन जीने की अपेक्षा की जाती है। जो व्यक्ति यीशु में विश्वास करके, अपने पापों से मन फिरा लेता है और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले चुका है, उसके पाप धो डाले गए हैं और उसे उद्धार पाया हुआ व्यक्ति माना जाता है।

निष्कर्ष

इस पाठ में हमने सीखा कि मनुष्य के उद्धार का मार्ग यीशु ही है। उद्धार का उसका *नया* ढंग पहली वाचा के *पुराने* ढंग अर्थात व्यवस्था की शर्तों की तरह नहीं है।

I. *ज़्या पुराना और नया ढंग एक जैसे ही हैं?* पुराने ढंग में *परछाई* अर्थात पशुओं का लहू आवश्यक था, परन्तु नया ढंग *वास्तविकता* अर्थात यीशु का लहू उपलब्ध करवाता है। इस *ढंग* का आरम्भ पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम से प्रचार के साथ हुआ था।

II. *नए ढंग को सिखाने के लिए ज़्या तैयारी की गई थी?* परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि अंतिम दिनों में उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा, जो कि प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के बहाए जाने से हो गया। पिन्तेकुस्त के दिन, आत्मा की सहायता से, उन्हें सारी सच्चाई में अगुआई मिलने लगी। आत्मा के आने से, उन्हें पहले यरूशलेम में, और फिर सारे संसार में यीशु के नाम में पापों की क्षमा का प्रचार करने के लिए तैयार किया गया।

III. *यरूशलेम में ज़्या सिखाया जाने लगा कि पापों की क्षमा के लिए किया जाना आवश्यक है?* पतरस ने समझाया कि उन्हें पापों की क्षमा के लिए मन फिराना और बपतिस्मा लेना आवश्यक है।

IV. *यह सिखाने के बाद लोगों ने कैसे ग्रहण किया?* उन्होंने विश्वास करके, और मन फिराकर (जो या तो स्पष्ट रूप से बताए गए हैं या कहीं-कहीं उनका संकेत मिलता है) और बपतिस्मा लेकर (जिसका अधिकतर घटनाओं में विशेष वर्णन है) ग्रहण किया।

V. *उनके बपतिस्मा लेने के बाद ज़्या हुआ?* उनसे नये जीवन में चलने की उम्मीद की जाती थी ज़्योंकि उन्हें क्षमा किया गया था, उनके पाप धोए गए थे और उनका उद्धार हुआ था।

आपको ज़्या लगता है कि यदि आज पतरस यहां होता तो पापों की क्षमा के लिए वह ज़्या बताता? ज़्या वे प्रचारक जिन्हें आप सुनते हैं वही प्रचार करते हैं जिसका पतरस ने प्रचार किया था?

[यदि बपतिस्मे के सम्बन्ध में प्रश्न उठते हैं, तो सीखने वाले को आश्वस्त करें कि अगले पाठ में उसे और विस्तार से समझाया जाएगा। अगले अध्ययन के लिए समय ठहरा लें।]